Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मुगल काल की सामाजिक स्थिति पर प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

मुगल काल की सामाजिक स्थिति पर प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव

Paramjeet Kaur[1] Dr. Anil Sharma[2]

[1]Research Scholar (History) Singhania University, Rajasthan

[2]Prof. History-Department, Geeta College of Education, Jind

----------X----------

प्राकृतिक आपदा के कारण समाज का सम्पूर्ण ढांचा प्रभावित होता था। लेकिन ऊपरी वर्ग के पास बचने के अनेक साधन व उपाय थे जिसके कारण अक्सर ये प्राकृतिक आपदा की मार से बच जाते थे। जबकि निचला तबका जिनके पास अनुकूल समय में अल्प साधन होते थे उनके लिए प्राकृतिक आपदा कहर बन कर आती थी। इसलिए जब भी भीषण व विस्तृत प्राकृतिक आपदा आती तो असंख्य लोग इसके शिकार होते थे। बहुत बार यह भी देखने में आया कि जनसाधारण प्राकृतिक विपदा से बचने के लिए स्थानातरण कर जाते थे।

प्राकृतिक विपदा के कारण मुगल प्रशासन को भी नुकसान उठाना पड़ा। यदि आपदा स्थानीय क्षेत्र तक होती तो प्रशासन के लिए कोई बड़ी समस्या नहीं आती थी। लेकिन यदि सन् 1556, 1595, 1630, 1660, 1711–12, 1718 व सन् 1737–38 जैसी विस्तृत आपदा आ जाती तो मुगल प्रशासन के सामने कई मुश्किलें आ जाती थी–सामाजिक स्तर पर आराधिक गतिविधियों का बढ़ना, दास के रूप में मानव का क्रय–विक्रय, धर्म परिवर्तन की संख्या में वृद्धि तथा खजाने में कमी, भ्रष्टाचार का बोलबाला, अच्छे प्रशासकों का नष्ट होना आदि।

सामाजिक दशा पर प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव :

मुगल काल की सामाजिक स्थिति पर प्राकृतिक आपदा के लघु व दीर्घकालीन हानिकारक प्रभाव पड़े। सूखे व बाढ़ रूपी आपदा से लोगों के लिए अधिक मुश्किलें खड़ी होती थी, क्योंकि इन आपदाओं का आकार बड़ा होता था। जिस कारण लोगों के पास उपाय के रूप में कुछ भी नहीं था। इसलिए वे स्थानान्तरण के माध्यम से राहत प्राप्त करते थे। मानव भक्षण जैसी अपराधिक प्रवृत्ति तथा लूटपाट की घटनाओं में वृद्धि हो जाती थी। समाज में भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी की घटनाएं होने लग जाती थीं। अनाज व खाने के बदलें में मानव अपने को दास के रूप में बचने के लिए तैयार हो जाता था। प्राकृतिक विपदा से मुगल काल की सामाजिक दशा में कई समस्याओं व कठिनाईयों का प्रवेश हो जाता था–

मानव भक्षण व शवों की दुर्गति :

मानव द्वारा मानव मास को खाया जाना ही मानव भक्षण कहलाता था। यह अपराध तब होता था जब मानव के पास भूख से बचने के साधन नष्ट हो गए हों। प्राकृतिक आपदाओं के प्रकोप से असंख्य मानव व पशु शक्ति नष्ट हो रही थी। मानव एवं पशुओं के शवों की दुर्गन्ध से महामारी फैल जाती थी जिस कारण मानव के शवों को दाह संस्कार से वंचित होना पड़ता था।

मुगल साम्राज्य में आई भीषण आपदाओं के कारण लोगों के पास खाने व पीने के लिए कुछ न होने की स्थिति में वे पेड़–पौधे और मांस खाकर जीवन बचाने के प्रयास करते थे। लेकिन वे बहुत बार गंदा मास खा लेते थे जिस कारण उनकी शीघ्र ही बीमारी से मृत्यु हो जाती थी। महामारी से मरे लोगों के शवों के पास जाने के लिए कोई तैयार नही होता था। कई बार तो गांव व शहर की जनसंख्या इतनी कम हो जाती थी कि लाशों को उठाने के लिए मानव शक्ति ही नही होती थी। बहुसंख्या में मरे मानव व पशुओं के शवों से कुछ ही समय में दुर्गन्ध आने लगती थी, जिस कारण महामारी फैलने के अवसर बढ़ जाते थे।

स्थानान्तरण :

अतीत काल से ही मानव प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए एक सरल व उचित रास्ते का अनुसरण करता आ रहा है, जिसे स्थानान्तरण कहा जाता है। मानव के निवास स्थान पर यदि लगातार दो वर्षों तक आपदा का प्रकोप रहता या एक ही वर्ष की दोनों फसलें नष्ट हो जाती तो मानव के सामने मुश्किलों का दौर प्रारम्भ हो जाता था। मुश्किलों से बचने के लिए वह मजबूरीवश स्थानान्तरण को अपनाता था। स्थानान्तरण अकसर दो रूपों में किया जाता–स्थायी व अस्थायी। अधिकांश समय में अस्थायी स्थानान्तरण को अपनाया जाता था। भारत के प्राचीन काल (रामायण काल) में स्थानान्तरण के सम्बन्ध में कई प्रमाणिक जानकारी मिलती है। पुराणों से ज्ञात होता है कि मानव अक्सर प्राकृतिक आपदा से पीड़ित होने से बचने के लिए खुशहाल स्थानों की ओर स्थानान्तरण करता था। इसी प्रकार सन् 1099 में भारत के कई भागों में अनावृष्टि के कारण अनाज व पशु चारे का अभाव हो गया। 6 जुलाई 1505 को आगरा के अधिकांश भागों में भूकंप आया, जिससे जनहानि हुई। जिस कारण बड़ी संख्या में लोग स्थानान्तरण कर गए।1

मुगल साम्राज्य में प्राकृतिक विपदा से बचने के लिए सबसे सरल व कारगर तरीका स्थानान्तरण था। लेकिन इसके लिए लोगों को मानसिक रूप से तैयार होना जरूरी था, क्योंकि वे अपना पैतृक स्थान छोड़ने में असहज थे। इसलिए यह देखने में आया कि अक्सर स्थानान्तरण अस्थायी ही होता था। जैसे ही विपदा घटी अपने स्थानों की ओर वे वापसी कर लेते थे।

www.ignited.in

मानव व पशु जीवन को हानि :

मुगल काल से पूर्व भी प्राकतिक आपदाओं से लाखों लोगों को कालग्रस्त होना पडा। प्राकृतिक विपदा का कोई भी रूप रहा हो, मानव जाति को अक्सर हानि हुई। जनसंख्या में कमी या वृद्धि आपदा की तीव्रता पर निर्भर थी। मुगल साम्राज्य भी मानव की संख्या की शक्ति पर आश्रित था। साम्राज्य की बुनियाद कृषि उत्पादन पर आधारित थी तथा उत्पादन में सीधे रूप से मानव शक्ति व संख्या का योगदान था। इसलिए प्रशासन भी बचाव के उपाय करता था जो कई बार देरी से प्रारम्भ हो पाते थे। जिस कारण लोगों को कोई विशेष राहत नहीं मिल पाती थी। पशु भी कृषि, आवागमन, दूध, मास व युद्ध के लिए प्रयुक्त किया जाता था। इनकी संख्या में कमी भी साम्राज्य के लिए हानिकारक थी, बल्कि इस कारण कृषि गतिविधियां काफी समय के लिए बाधित हो जाती थी। अनवरत रूप से आई विपदाओं से मानव व पशु जीवन को बहुत बार नुक्सान उठाना पड़ा।

मुगल काल में प्राकृतिक आपदा ने मानव जीवन व पशुधन दोनों को बड़े स्तर पर नुक्सान पहुंचाया। अनावृष्टि व अतिवृष्टि से जहां उत्पादन नष्ट होकर मानव के लिए भूखमरी की स्थिति पैदा करती थी। वही महामारी व भूकंप मानव व पशु जीवन को प्रत्यक्ष रूप से नुक्सान पहुंचाता था। जबकि यह समय मानव व पशु संख्या व शक्ति पर आश्रित था, जिस कारण मुगल साम्राज्य की आय में गिरावट आती थी तथा प्रशासन की गतिविधियां भी बाधित होती थीं।

अन्य सामाजिक दशा पर प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव :

प्राकृतिक विपदाओं से मुगल कालीन समाज बाधित होता रहता था। आत्महत्या, बच्चों को अनाज के बदले में बेचना, दास बनाना, भीख मांगना, अपराध में वृद्धि होना, धर्म में परिवर्तन करना, गंदा भोजन करना, मानव शवों का उचित दाह संस्कार न होना आदि घटित घटनाओं में विविध प्राकृतिक आपदाओं को योगदान होता था।

प्राकृतिक आपदा के दिनों में जन साधारण के लिए मुश्किलों भरा समय होता था। इसलिए 1556 की भीषण आपदा ने लोगों को भूख मिटाने के लिए अपने बच्चों को अनाज के बदले में बेचने के लिए मजबूर कर दिया। असंख्य लोग दास बन गए।2 सन् 1576 में कश्मीर में ओलावृष्टि से कृषि उत्पादन नष्ट हो गया। खाद्यान्न की कीमत में अत्यधिक वृद्धि हो गई। लोग अनाज के बदले में दास बनने को तैयार थे।3 उत्तरी भारत के सूबों लाहौर, दिल्ली, अवध, आगरा व कश्मीर में सन् 1595–98 के वर्षों में भयंकर अकाल पड़ा तथा महामारी का प्रकोप भी था। मां–बाप बच्चों को खुले बाजार में अनाज के बदले में बेच रहे थे।4

इन वर्षों में आई प्राकृतिक विपदाओं के कारण – भूख से तड़पते बच्चों को गलियों में छोड़ दिया गया। इन बच्चों को पुर्तगाली फादर जॉवियर ने ईसाई धर्म का अनुयायी बनाया तथा इनको खाने की सामग्री दी।5 साथ ही इन वर्षों में अपराध की घटना बढ़ गई। अक्सर अनाज की चोरी की घटना सामने आती थी। जिसके कारण अपराधियों की संख्या जेल में बढ़ जाती थी तथा जेल की व्यवस्था में अवरोध आता था।6

सन् 1614–15 में अनावृष्टि के कारण प्लेग महामारी फैल गई। लाहौर व दिल्ली में यह आपदा फैली हुई थी। जहां पर मानव के शवों का उचित दाह संस्कार भी नही हो पा रहा था।7

सन् 1618–19 में दक्षिण भारत में भीषण अकाल था। इस अकाल के कारण सैंकड़ों की संख्या में रोजाना दासों का क्रय हो रहा था। पुलीकट के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में जन हानि हुई। इस समय के दौरान विजयनगर के कुछ भागों में उत्पादन न होने से महंगाई इतनी अधिक थी कि माता–पिता हजारों की संख्या में अपने बच्चों को समुन्द्र तट पर लाकर और चावल के कुछ दानों के लिए बच्चों को बेच रहे थे।8

मुगल साम्राज्य के अधिकांश भागों में सन् 1630–32 में भीषण सूखा अकाल व महामारी आई। इस भयंकर आपदा के दौरान खाद्यान्न न होने से लोग भूख से मरने लगे। गलियां व सड़के लाशों से भरी पड़ी थी। इनकी उचित व्यवस्था न होने के कारण वायु दूषित हो गई तथा शीघ्र ही महामारी फैल गई। मानव ने अपने को तथा बच्चों को अनाज के बदले में बेचने लग गया था तथा पत्नी व बच्चों को छोड़ दिया।9

समकालीन इतिहासकार अब्दुल हामीद लाहौरी से ज्ञात होता है कि– सुसंत्रा गांव में खुले रूप से मानव मांस बिक रहा था।10 लोग कुत्ते का भी मांस खा रहे थे। एक स्थान पर सूचना मिलती है कि मां ने अपने नवजात बच्चे को भी खा लिया, पति ने पत्नियों को खा लिया इत्यादि। जघन्य अपराध बढ़ गए थे। बहुत से लोग व्याकुल होकर आत्महत्या करने लग गए थे। सड़क सुरक्षित नही थी। कई बार व्यापारियों को लुट लिया जाता था।11 इस प्रकार इस आपदा के दौरान मानव को एक रूप से असामाजिक प्राणी बना दिया था। उन्होंनें भूख मिटाने के लिए सभी सामाजिक दायरे नष्ट कर दिये। सन् 1640–41 में दक्षिण भारत के कई क्षेत्रों में उत्पादन की कमी में मानव का दास के रूप में क्रय–विक्रय हो रहा था। इसी प्रकार 1642 में कश्मीर में भीषण आपदा के कारण लगभग 30 हजार लोग पलायन कर लाहौर की ओर चले गए।12

सन् 1646–47 में मुगल साम्राज्य के अजमेर व सिंध सूबों में उत्पादन न होने से असंख्य पशु मारे गए थे। उनकी लाशों से वायु में दुर्गन्ध फैल गई जिस कारण बड़ी संख्या में मानव मारे गए। लोगों ने सड़को को असुरक्षित कर दिया। समाज में अपराध कार्यों में वृद्धि हो गई।13 इनके अतिरिक्त कोरोमण्डल तट पर भीषण अकाल पड़ा। लोगों की दशा आपदा से इतनी दयनीय हो गई – लोग किसी भी ऐसे व्यक्ति का दास बनने को तैयार थे जो खाना खिलाएं। 1647 तक आते–आते हालत अत्यंत शोचनीय हो गई थी। मुत्यु को प्राप्त हो रहे व्यक्तियों के वैसे आर्तनाद का जिक्र है जो सुनने वाले व्यक्तियों में आतंक भर थे।14

सन् 1650 में भारत के अनेक भागों में अनावृष्टि से सूखा अकाल था। अवध से गुजरात तक इसका प्रभाव पड़ा। भारत के सभी भागों में पैदावार कम हुई। अनाज के बदले में मानव का क्रय–विक्रय हो रहा था।15 गुजरात, सिंध, अजमेर एवं दिल्ली सुबों में सन् 1658 में अनावृष्टि के साथ महामारी फैल गई। लोग भूख से व्याकूल होकर अपने बच्चों को अनाज के बदले में बेच रहे थे। बंजारों को लूटने की घटनाएं बढ़ रहीं थीं तथा अपराधिक गतिविधियों में वृद्धि हो गई। जिस कारण मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था में बाधा आई।16

साम्राज्य के कई भागों में सन् 1660–61 में सूखे से लोगों की स्थिति शोचनीय थी। जनसाधारण लोग अमीरों के घरों में खाने के बदले में दास बनकर रह रहे थे।17 हालात इतने बुरे थे कि एक युवा लड़का या लड़की 8 आने में दास के रूप में मिल जाता था। सुन्दर एवं योग्य दास केवल एक रूपया में मिल जाता था।18 मेवाड़ से सूचना मिलती है कि अनाज के अभाव में लोग

भूख से काल ग्रस्त हो गए।19 1662ई. में पूर्वी सूबों में मलेरिया फैल गया जिस कारण बड़ी संख्या में लोग मारे गए। गरीब व्यक्तियों ने खाद्यान्न की कमी में पेड़–पत्तों एवं सड़ा भोजन खा लिया।20 तथा वे निर्लज्ज होकर भाई–बहिन, मां–बाप, पति–पत्नी, सगे–सम्बन्धियों से सम्बन्ध त्याग देते थे। इस प्रकार अनाज के बदले में जन का क्रय–विक्रय हो रहा था।21

मुगल साम्राज्य के बिहार सूबे में सन् 1670–71 में भीषण अकाल पड़ा। इस आपदा के दौरान पटना एवं अन्य स्थानों पर लगभग 1.03 लाख लोग मारे गए। लाशों की दुर्गति हो रही थी। बड़ी संख्या में बच्चों को बेचा जा रहा था।22 अजमेर सूबे में सन् 1682 में भीषण अकाल के साथ प्लेग रूपी महामारी फैल गई। सेठ, साहूकार, राजपूत व अन्य सभी दुर्भिक्ष से दुःखी थे। पशुचारे में रोग फैलने से अनगणित पशु मारे गए। लोगों ने आभूषण देकर (गिरवी) रखकर उधार लिया और उस पर भी पांच रूपए सैंकड़े का ब्याज देना स्वीकार किया। साथ ही चोरी व रिश्वतखोरी की घटनाएं बढ़ गई।23

सिंध एवं गुजरात में सन् 1684 से 1688 के मध्य अनावृष्टि एवं महामारी का भयंकर प्रकोप था। समकालीन इतिहासकार अली मुहम्मद खां से ज्ञात होता है कि लोग भूख से व्याकूल होकर अपने को अनाज के बदले में दास के रूप में बेचने को तैयार थे।24 सन् 1695–96 में आपदा से सामाजिक हलचल व तनाव पैदा हो गया तथा अपराधिक गतिविधियों में वृद्धि हो गई।25 सन् 1703–04 वर्षों के दौरान दक्कन भारत में अनावृष्टि एवं महामारी के भयंकर प्रकोप से 2 लाख लोग मारे गए। उत्पादन न होने से जनता के पास खाने को कुछ नहीं था। इसलिए स्थानीय जनता दास के रूप में कुछ खाद्यान्न के लिए बिक रही थी तथा कुछ लोगों ने आत्महत्या कर ली।26

मुगल साम्राज्य के कई भागों में सन् 1707 व 1711 में विपदा के कारण लोगों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। समाज में तनाव, चोरी व अपराधिक गतिविधियों में वृद्धि हुई।27 1718ई. में भी अनावृष्टि व महामारी रूपी आपदा से साम्राज्य की कुल जमा आय पर भी बुरा प्रभाव पड़ा। सामाजिक सम्पर्क भी कमजोर हो रहा था।28 1728, 1730, 1737, 42, 48 एवं 1750ई. में विविध आपदाओं का घटित होना जारी था।29 इन आपदाओं के कारण लोगों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। अनाज की कमी में लोग दास के रूप में बिक रहे थे। भीख मांगने व धर्म परिवर्तन की घटनाएं भी घटित हो रही थीं।30

इस प्रकार ज्ञात होता है कि मुगल साम्राज्य में आई विविध प्राकृतिक आपदाओं के कारण स्थानीय जनता को सामाजिक जीवन में जनता को अनके मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। खाद्यान्न के अभाव में लोग भूख से व्याकूल होकर अपना जीवन भी दांव पर लगा देते थे। दास के रूप में अपने को तथा बच्चों का अनाज के बदले में बेच देते थे। आत्महत्या एवं नरभक्षी जैसे जघन्य कार्य भी करने लग जाते थे। शवों को विधि से संस्कार नही मिल पाता था। लोग गंदा भोजन एवं पानी खाने–पीने से बीमार हो जाते थे। अनाज चोरी एवं अन्य अपराध भी बढ़ जाते थे। प्राकृतिक विपदाओं का प्रवेश समाज में तनाव व क्लेश की गतिविधियों में तेजी लाता था।

संदर्भ सूची :

1. निजामुद्दीन अहमद, तबकात–ए–अकबरी, हिन्दी अनु. सैयिद अतहर अब्बास रिजवी, उत्तर–तैमूरकालीन भारत, भाग–1, अलीगढ़, 1958, पृ. 325–26.
2. बंदायूनी, मुन्तखाब–उत–तवारीख, अंग्रेजी अनु. डब्ल्यू. हेग, पटना, 1977, वोल्यूम–।, पृ. 549–50.
3. सुक्रा एंड प्रजाभट्ट, राजवडी पत्रिका, अनु. वाई.सी. दत्त, वोल्यूम–।।।, पृ. 394–95.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी अनु. एच. बेवरिज, वोल्यूम–।, पृ0. 625.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, एच. बेवरिज, वोल्यूम–।।।, पृ. 721–32.
6. जे.एन.सरकार, स्डिडीज इन इकानामिक लाईफ इन मुगल इण्डिया, पृ. 252.
7. जहांगीर, तुजुक–ए–जहांगीरी, अंग्रेजी अनु. ए. रोगरस एंड एच. बेवरिज, वोल्यूम–।, 161–62, पृ. 330.
8. हेग, दा कैम्ब्रीज हिस्ट्री आफ इण्डिया, वोल्यूम–।, पृ. 162.
9. अब्दुल हामीद लाहौरी, बादशाहनामा, हिन्दी अनु. रघुबीर सिंह व मनोहर सिंह, दिल्ली, 1972, पृ. 362–64.
10. वही, पृ. 364.
11. डब्ल्यू.एच.मोरलैण्ड, फरोम अकबर टू औरंगजेब, पृ. 211–13.
12. अब्दुल हामीद लाहौर, बादशाहनामा, पूर्वोक्त, पृ. 382–83.
13. विलियम फोस्टर, फैक्ट्री रिकार्डस्, पृ. 1646–50. पृ. 192–93.
14. विलियम फोस्टर, फैक्ट्री रिकार्डस्, पृ. 157,192.
15. विलियम फोस्टर, फैक्ट्री रिकार्डस्, 1646–50, पृ. 322,
16. कर्नल जेम्स टॉड, एनालस एंड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, वोल्यूम–।।, पृ. 454–55.
17. अब्दुल हामीद लाहौरी, बादशाहनामा, हिन्दी अनु. रघुबीर सिंह व मनोहर सिंह, भाग–।, पृ. 362.
18. जॉन मार्शल, नोटस् एंड ओबजरवेशन ऑन इस्ट इंडिया, (1668–72) स. एस.ए. खान, लंदन, 1927, पृ. 149–50.

19. कर्नल जेम्स टॉड, एनालस एंड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, वोल्यूम–।।, पृ. 454–55.

20. मुस्तैद खां साकी, माआसीर–ए–आलमगीरी, अंग्रेजी अनु. सरजदुनाथ सरकार, पृ. 26–27.

21. यति जयचन्द, सईकी, हिन्दी अनु. मुनि कान्ति सागर, पृ. 40–45.

22. जॉन मार्शल, नोटस एंड ओबजरवेशन ऑन ईस्ट इण्डिया, (1668–72) स. एस.ए. खान, जान मार्शल इन इण्डिया,

पृ. 125–27, 149–53.

23. यति जयचंद, सईकी, पृ. 36–7.

24. अली मुहम्मद खां, मिरात–ए–अहमदी, अंग्रेजी अनु. एम. एफ. लौखंडवाला, वोल्यूम–।, बड़ौदा, 1965, पृ. 325, 329–30.

25. वही, पृ. 335–36.

26. मनुची, स्टोरिया डो मोगोर, अंग्रेजी अनु. डब्ल्यू. इर्विन, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, वोल्यूम–प्ट, पृ. 97.

27. बी.लवडे, दा हिस्ट्री एंड इक्नामिक्स आफ इण्डियन फैमइन्स, पृ. 137–39.

28. एन.ए.सिद्दकी, लैण्ड रिवेन्यू एडमिनिशट्रेशन अण्डर मुगलस (1700–1750). बम्बई, 1970, पृ. 207–15.

29. चिठ्ठी दिवान कान्हाराम नंद लाल अमील परगना चाटशू, फाल्गुन वदी 3, सं. 1810/1753ई., राजस्थान अभिलेखागार बीकानेर दिलबाग सिंह, दा स्टेट, लैण्डलोर्डस एण्ड पिजेंट्स, राजस्थान इन एटीन्थ सच्यूरी, नई दिल्ली, 1990, पृ. 22–41

30. वाई.याइकुन्थन, स्टेट इॅकानॉमी एंड सोशियल ट्रांसफोरमेशन, हैदराबाद स्टेट, 1724–1947, पृ. 82–83.